RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 47 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 29 अप्रैल 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पूरे चुनाव में सिर्फ मोदी-राहुल के चर्चे

उत्तराखण्ड में सिमटे नेता नई जुगत में लग चुके हैं जबकि जनता परिणाम के लिये उतावली है

पहाड़ की राजनीति में हलचल

लगे हाथ निकाय चुनावों की तैयारी

कार्यालय प्रतिनिधि

लोकसभा चुनाव 2024 के पूरे अभियान में इस बार लहर एकतरफा नहीं कही जा सकती है, इसलिये मोदी-राहुल की चर्चा है। इतना जरूर है कि भाजपा का संगठन और तैयारी ज्यादा होने वह आगे है। भाजपा के पास नरेन्द्र मोदी को आगे कर चुनाव लड़ने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं दिख रहा है जबकि विपक्ष के पास 'करो या मरो' की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में एकजुट 'इण्डिया' ग्रुप बना लेकिन राहुल गांधी की चर्चा सबसे ज्यादा है। यही सब प्रभाव पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड में भी है। प्रदेश की पाँचों लोकसभा सीटों पर प्रचार-प्रसार के लिये अपने आप से किसी में जोश नहीं था बल्कि पार्टियों द्वारा आयोजित सभा-शो में कार्यकर्ताओं को ढोया गया। पार्टियां छोड़कर इधर-उधर जाने का आयोजन होता रहा। इन हालातों को समझ चुके उत्तराखण्ड में सिमटे नेता नई जुगत में लग चुके हैं। क्योंकि जिस अनुपात में कांग्रेस छोड़ भाजपा में नेता आए हैं उन्हें किस प्रकार से सन्तुष्ट किया जाएगा यह आने वाले दिनों पता लगेगा। कुछ नेता तो लगातार इधर-उधर पार्टी बदल के कारण अपनी धार खो चुके हैं। यह दौर एकदम बदलाव का है। पहला बदलाव तो चुनाव प्रचार के तरीकों में हो चुका था। दूसरा राजनीति में हलचल होनी है। राजनीति में आने का मतलब सीधा सा लगाया जा रहा है कि तत्काल लाभ....। गणित लगाकर चलने वाले नेता अब लगे हाथ निकाय चुनाव की तैयारी में लग चुके हैं। नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम के लिये होने वाले चुनाव के लिये पार्टी टिकट किसको मिलेगा, कौन प्रतिनिधि बनने का लाभ ले पाएगा, कौन चुनाव परिणाम के बाद अपने को सन्तुलित रख पाएगा क्योंकि सत्ता चाहे जिसकी बने चेहरे देखकर फैसला होना तय है।

हिमालयी क्षेत्र के संरक्षण से ही थमेगा पर्यावरणीय संकट

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

हिमालय में हो रही अप्रिय घटनाओं को अब मात्र हिमालय की नहीं माना जा सकता। खास तौर से जब आने वाले समय में टूटते हिमालय के कारण देश में पारिस्थितिकी असुरक्षा बढ़ सकती हो, क्योंकि यह तो सब स्वीकार करेंगे ही कि अकेला हिमालय देश के 65 प्रतिशत से ज्यादा लोगों को पानी देता है। हवा का तो कोई मोल भाव ही नहीं है। यदि सबसे ज्यादा वन कहीं पनपते हैं तो वे हिमालय में ही हैं। इन सबके ऊपर ये हिमखण्ड ही हैं, जो हमारे लिए एक फिक्स डिपाजिट की तरह हैं, जो हर परिस्थिति में मानव को अमूल्य जल उपलब्ध कराते हैं। हिमालयी पर्वत सहायता के लिये चीत्कार कर रहे हैं। कॉप-28 को इसका जवाब देना चाहिए।

उन्होंने यह भी जोड़ा कि हिमालयी ग्लेशियर इतनी तेजी से पिघल रहे हैं कि डर है कि वहाँ सारे ग्लेशियर खत्म न हो जायें। हिमालयी पहाड़ बर्फ विहीन हो रहे हैं। यदि हम राह नहीं बदलेंगे तो भयंकर त्रासदी ले आयेंगे। ग्लेशियर लुप्तप्राय होने से गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र में पानी कम हो सकता है। इससे 2500 लाख लोगों पर असर पड़ेगा। अक्टूबर, 2023 में नेपाल भ्रमण के अनुभवों का उल्लेख करते हुये महासचिव का कहना था कि नेपाल ने पिछले तीस सालों में एक-तिहाई बर्फ खोने की बात भी कही जिससे वहाँ स्थानीय समुदायों के जीवन पर असर पड़ा है। निस्संदेह आज तेजी से गर्म होती पृथ्वी में जैव विविधता के साथ-साथ ग्लेशियर भी हमारा साथ छोड़ते जा रहे हैं। हजारों साल पहले तक ग्लेशियर कई महाद्वीपों के भूभागों में विस्तार लिये थे। ये सिकुड़ते गये व अब विश्व के दस प्रतिशत क्षेत्र में हैं। भारी-भरकम ग्लेशियर लम्बाई- चौड़ाई में सैकड़ों किलोमीटर परिमाप और मोटाई में 70 से 100 मीटर से तीन-चार किलोमीटर तक परिमाप के भी हो सकते हैं। विश्व के जल भण्डार सारे वैश्विक ग्लेशियर यदि पिघल जायें तो सागर स्तरों में लगभग 230 फीट की बढ़ोतरी हो जायेगी। ग्लेशियर तो स्वत: भी पिघलेंगे ही। तभी तो विश्व की ऐसी हिमपोषित नदियां अस्तित्व में आती हैं जो कम बरसातों में भी सदानीरा रहती हैं। किन्त 21वीं सदी की शुरुआत से ही हिमालयी ग्लशियरों की पिघलने की दर दुगुनी हो गई है। ये हर साल करीब-करीब आधा मीटर की मोटाई खो रहे हैं। इससे नदियों पर जैव विविधता पर व जलवायु पर असर पड़

शेष पृष्ठ 2 पर

खूब मचा जागरूकता का शोर लेकिन ५६ प्रतिशत मतदान कर खूब छकाया है

अल्मोड़ा सीट

47.60 प्रतिशत मतदान वाली इस सीट पर उम्मीदों से कम मत देखने को मिले हैं। शुरू से ही प्रतिद्वन्दी रहे भाजपा के अजय टम्टा और कांग्रेस के प्रदीप टम्टा के बीच मुकाबला है। इसमें पार्टी कार्यकर्ताओं की मेहनत दिखाई देगी।

पौड़ी सीट

51.94 प्रतिशत मतदान वाली इस सीट पर भाजपा के अनिल बलूनी और कांग्रेस के गणेश गोदियाल के बीच कांटे की टक्कर है। सीट पर सर्वाधिक स्टार प्रचारकों ने दौड़ लगाई थी। स्थानीय मुद्दों को हवा देकर माहौल बहुत बदला है।

हरिद्वार सीट

62.36 प्रतिशत मतदान वाली इस सीट का मुकाबला चौंकाने वाला होगा। भाजपा की ओर से त्रिवेन्द्र रावत, कांग्रेस की ओर से वीरेन्द्र रावत और निर्दलीय उमेश कुमार के बीच मुख्य रूप से मुकाबला है।

टिहरी सीट

52.82 प्रतिशत मतदान वाली इस सीट पर रोचक मुकाबला है। भाजपा की माला राजय लक्ष्मी साह दमखम के साथ मैदान में हैं। बॉबी पंवार का शोर चारों ओर है। कांग्रेस ने जीत सिंह गुनसोला को मैदान में उतारा है।

नैनीताल सीट

61.75 प्रतिशत मतदान वाली इस सीट पर भाजपा के अजय भट्ट और कांग्रेस के प्रकाश जोशी अपनी-अपनी जीत का दावा कर रहे हैं। मत प्रतिशत के हिसाब से इस सीट पर सर्वाधिक मतदाताओं ने वोटिंग की।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

मतदाता मौन है

उत्तराखण्ड में लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण में पाँच सीटों के लिये ५६ प्रतिशत मतदान हुआ। मतदाताओं को जागरूक करने के लम्बे अभियान के बाद भी इस बार पिछले लोकसभा चुनाव (२०१९) से तकरीबन ४.४५ प्रतिशत कम मतदान हुआ। इतना ही नहीं वोट देकर लौटे मतदाता अभी तक मौन हैं। स्थानीय मुद्दों को लेकर चुनाव में २५ स्थानों पर तो मतदान का बहिष्कार किया गया। २०१९ में १० स्थानों पर चुनाव बहिष्कार हुआ था। हरिद्वार के ज्वालापुर क्षेत्र में एक मतदान केन्द्र में गुस्साए मतदाता ने ईवीएम को जमीन पर पटक दिया, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

इस बार लोकसभा चुनाव के लिये अल्मोड़ा लोकसभा सीट पर ४७.६० प्रतिशत, पौड़ी लोकसभा सीट पर ५१.९४ प्रतिशत, हरिद्वार लोकसभा सीट पर ५९.०१ प्रतिशत, नैनीताल लोकसभा सीट पर ६१.७५ प्रतिशत, टिहरी गढ़वाल लोकसभा सीट पर ५३.८२ प्रतिशत मतदान हुआ।

यह विचारणीय प्रश्न है कि सारे प्रयासों के बावजूद मतदान का प्रतिशत कम है। देश के २१ राज्यों की १०२ सीटों के लिये प्रथम चरण में हुए मतदान में ६८.२९ प्रतिशत वोटिंग हुई। इसमें सबसे अधिक लक्षद्वीप ८३.८८ प्रतिशत और सबसे कम बिहार ४८.८८ प्रतिशत है। देश में सरकार बनाने के महापर्व को लेकर सालों साल चर्चाएं होती हैं लेकिन मतदान के समय मतदाता बचने लगा है, यह सवाल विचलित करने वाला है। सीधा सी बात है वह मतदाता लाइन में क्यों लगे जो किसी भी सरकार के होने पर मेहनत-मजदूरी कर अपने को जिन्दा रखे हुए है? वह मतदाता क्या करे जिसकी कोई सुनवाई कहीं नहीं है? वह मतदाता किसको मत देने जाए जो उपेक्षित है? मतदान के दौरान देखा गया शहर के भरे-पूरे मोहल्ले सुबह उठते ही वोटिंग करने लाइन में थे लेकिन एकदम मौन। इससे भी अंदाज लगता है कि एक ओर जैसे-तैसे जीवन यापन कर रहा मतदाता अपने को बचाने में लगा है, दूसरी ओर शहर की भरपूर जिन्दगी में उलझा मतदाता चुपचाप अपनी कर रहा है। ये दोनों ही स्थितियां हैं जो जनक्रान्ति नहीं कही जा सकती हैं। इन्हें अपने को सुरक्षित रखना है। मतदाताओं का इस प्रकार मौन या किनारे हो जाना लोकतन्त्र के लिये अधूरी बात है। इन्हें देश के लिये जागना ही होगा।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

मुनि समय सागर विद्यासागर के उत्तराधिकारी

दमोह। कुंडलपुर तीर्थ क्षेत्र में समाधिस्त आचार्य विद्यासागर महाराज के उत्तराधिकारी के तौर पर मुनि समय सागर महाराज ने आचार्य पद स्वीकार किया। इस दौरान आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और मुख्यमंत्री मोहन यादव सहित लाखों लोग मौजूद थे।

सोने की डकैती में दो भारतवंशी शामिल

ओटावा। गत वर्ष टोरंटो के मुख्य एयरपोर्ट पर कनाडा के इतिहास में करोड़ों डॉलर के सोने की सबसे बड़ी चोरी डकैती के मामले में गिरफ्तार 6 लोगों में से 2 भारतवंशी शामिल पाए गए हैं। कनाडाई असफरों ने मामले में तीन और लोगों के लिए वारंट जारी किया है।

भारत के साथ मिलकर बख्तरबंद वाहन निर्माण

वाशिंगटन। अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने अमेरिकी सांसदों से कहा कि भारत और अमेरिका के बीच भारतीय वायु सेना के लिये मिलकर लड़ाकू विमान इन्जन बनाने के सम्बन्ध में जो समझौता हुआ है वह क्रान्तिकारी है। उन्होंने सदन की विनियोग उपसमिति को कहा, हम भारत के साथ मिलकर एक बख्तरबन्द वाहन का भी निर्माण कर रहे हैं।

हिमालयी क्षेत्र....

प्रथम पृष्ठ का शेष

रहा है। यदि ग्लेशियर ही न रहेंगे तो उनसे निकली नदियां भी कहाँ रह पायेंगी। किन्तु ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने से भविष्य में जल के संकट व बाढ़ों की सम्भावनाएं भी गहरा जाती हैं। इनमें खतरनाक ग्लेशियल झीलें भी बन जाती है। जिनके टूटने से तबाहियां आती रही हैं।

उत्तराखण्ड में भी लगभग 486 ग्लेशियल झीलें हैं जिनमें से 13 बेहद जोखिम वाले हैं। दुनियाभर में तीस हजार वर्गमील ग्लेशियर तापमान की वैश्विक समस्या झेल रहे हैं। साल 2018 में बंगलुरु के जलवायु बदलाव पर काम करने वाले एक संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि पश्चिमोत्तर हिमालय में 1991 के बाद औसत तापमान 0.66 सेंटीग्रेड बढ़ गया है। वहाँ सर्दियां भी लगातार गर्म हो रही हैं। अमेरिका की एक एजेंसी तो पूरे हिन्दु कुश हिमालय पर ही जलवायु बदलाव के खतरों से सालों पहले आगाह कर चुकी थी। हैरानीजनक है कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव जैसी चिन्ताएं सितम्बर, 2023 जी-20 के दिल्ली शिखर सम्मेलन के जलवायु और पर्यावरण से सम्बन्धित घोषणा पत्र में कही नहीं उभरी। हिन्दु कुश हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ते तापक्रम से भारी उथल-पुथल से गलते ग्लेशियर व उनसे आती बाढ़ों जैसे संकटों की चिन्ता हिन्दु कुश हिमालयी देश चीन व भारत में तो होनी ही चाहिये थी।

कटु यथार्थ तो यह है कि हिन्दु कुश हिमालयी क्षेत्र के देश भारत में 70 प्रतिशत से ज्यादा बिजली उत्पादन कोयले से हो रहा है और निकट भविष्य में भी होता रहेगा। चीन भी कोयले का और अधिक उपयोग कर रहा है। इन देशों में बिजली उत्पादन, औद्योगीकरण, परिवहन, पर्यटन, तीर्थाटन के नाम पर ग्लेशियर क्षेत्रों तक मानवीय भीड़ व गतिविधियां भी पहुँची हैं। बता दें कि 7 फरवरी, 2021 को चमोली जिले में रैणी व तपोवन क्षेत्र में हुए जल प्रलय का कारण अप्रत्याशित रूप से ग्लेशियर विखण्डन व ग्लेशियल झील फटने से जुड़ी दुर्घटना ही थी। केदारनाथ में 2013 की त्रसदी में भी ग्लेशियल लेक बाढ़ बहाव की भूमिका थी। पवित्र चारधाम श्री बदरीनाथ, श्री केदारनाथ, श्री गंगोत्री व श्री यमुनोत्री धाम जो ग्लेशियरों के अंचल क्षेत्र हैं, वहाँ सीमित समय में हर धाम में लाखों श्रद्धावान पहुँच रहे हैं। हजारों वाहनों की हजारों ट्रिप हो रही हैं। आकाशीय परिवहन भी बढ़ रहा है। यहाँ सीमेंट-सरिया से निर्माण भी बढ़ा है। श्री बदरीनाथ धाम के पास सतोपंथ ग्लेशियर है। यमुनोत्री ग्लेशियर भी यमुनोत्री से लगभग दस किमी पर है। गंगोत्री ग्लेशियर का गोमुख भी बीते दशक में करीब 300 मीटर पीछे खिसक गया है। भारत को अपने ग्लशियरों को बचाना चाहिये। ऐसे आर्थिक लोभ की गतिविधियों से भी बचना चाहिये जिससे हिमालयी ग्लेशियरों पर संकट आये। बाहर की भीड़ को वहाँ ग्लेशियरों पर संकट न पैदा करने दीजिये। इससे प्रदूषक कार्बन गैसें, ग्रीन हाउस गैसें वहाँ पहुँच रही हैं। इनसे ग्लेशियरों में उष्मीय ऊर्जा भी कैद हो रही है। ग्लेशियर्स की सेहत के लिए बर्फ पर कम से कम गतिविधियां हों। उनके आसपास वेर्डिंग डेस्टिनेशन और ज्यादा हवाई उड़ानों को न लायें। यहाँ दांव पर हिमालय-क्षेत्र का पर्यावरण और उसके प्राकृतिक संसाधन लगे हैं। यह यथार्थ केवल हिमालय का नहीं बल्कि दुनिया के उन सभी भूभागों का है जो पारिस्थितिकी की दृष्टि से इतने ही सम्वेदनशील हैं इन तथ्यों को विचार में रखते हुए नीति नियन्ताओं के लिए यह एक चुनौतियों से भरा काम है कि विकास और संरक्षण के बीच न्यायसंगत सन्तुलन बनाते हुए कार्य-योजनाओं का निर्माण करें। वर्तमान समय में हिमालय से स्थानीय लोगों का बहुत तेज पलायन हो रहा है। ऐसे में यहाँ युवाओं के लिए पर्यटन के क्षेत्र में भाग्य आजमाने के अवसरों की कोई कमी नहीं है। यह अक्सर देखा गया है कि पर्यटन को मुख्यत: गिनती के लोगों के मुनाफे के स्रोत पर केन्द्रित किया जाता रहा है और वे गिनती के लोग भी इस इलाके से बाहर के लोग हैं। लेकिन इसके सामाजिक और पर्यावरण सम्बन्धी दुष्प्रभाव मुख्यत: स्थानीय समुदायों को झेलना पड़ता है। इसलिए भी हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण और लोगों के आर्थिक लाभ के बीच एक सन्तुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। प्राकृतिक आपदाओं को पूरी तरह से रोक पाना तो सम्भव नहीं है लेकिन पहले से की हुई तैयारियों और योजनाओं से क्षति को कम अवश्य किया जा सकता है। भवन निर्माण से सम्बन्धित कानून को लागू करने, कमजोर क्षेत्र के लिए प्रतिकूल परियोजनाओं पर प्रतिबन्ध लगाने और भूगर्भीय दृष्टि से अनुकूल परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए जरूर कानून बनाने की आवश्यकता पर बल दिया जाना चाहिए। हिमालय क्षेत्र के राज्यों को इन तथ्यों को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है। उसी तरह आपातकालीन विस्थापन का अभ्यास, वस्तुस्थिति पर निगरानी, बादल फटने जैसी घटना का पूर्वानुमान लगाने में सक्षम डोपलर राडार जैसी चेतावनी देने वाले यंत्र तथा दूसरी तकनीकों में स्थानीय लोगों की पूरी रूचि और सहभागिता भी आवश्यक है।

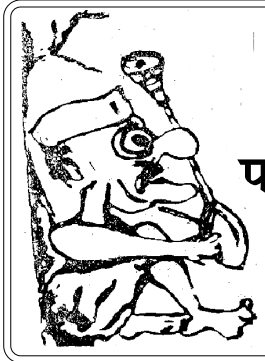

फसक

दाज्यू, चुनाव के दिनों में पकड़-धकड़ होने वाली ठैरी

रोजी-रोटी के अलावा भी बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं बल

दाज्यू, लोकसभा चुनाव के दौरान चुनाव आयोग ने करोड़ की नबदी, शराब, ड्रग्स, उपहार बरामद कर लिये हैं। दाज्यू, चुनाव के दिनों में पकड़-धकड़ होने वाली ठैरी। किसी नेतागर्द का दबाव नहीं होता है बल। पकड़ने वाले साब लोग भी निझर्क होकर काम करते हैं। बांकी समय क्या होता है, सब जान ही रहे हैं। रोजी-रोटी के अलावा भी पापड़ बेलने पड़ते हैं बल। दाज्यू, जागेश्वर धाम के नाम पर फर्जी पेज बनाकर लोगों से ठगी की जा रही है बल। इसमें पूजा-पाठ के नाम से रेट बताए गए हैं। घपलू बता रहा है- 'फर्जी पेज पर धाम में व्यापार वृद्धि महाकुबेर नाम से यज्ञ कराने की बात भी है।' कुबेर तो हमने सुना था लेकिन ये महाकुबेर क्या ठैरा? हमें तो इतना ही समझ आ रहा है- 'दुनिया महा ठगनी हम जानी।'

दाज्यू, इससे पहले हरिद्वार के दक्षिण काली मन्दिर में श्रद्धालुओं को पुजारी व कर्मियों ने लट्ठ से धुन दिया था। बबलू कह रहा था- 'पार्किंग शुल्क को लेकर बबाल मचा और फिर लट्ठबाजी होने लगी।' दाज्यू, पार्किंग का धन्धा भी रोजी रोटी का बड़ा तामझाम है। मेलों, मन्दिरों, दर्शनीय स्थलों सहित कई बहुत जरूरी जगहों पर भी मुसटंडे तैयार रहते हैं बल। बाद को पता चलता है कि पार्किंग शुल्क लेने वाले फर्जी थे या पार्किंग रसीद फर्जी है। दादागिरी का काम भी ठैरा यह सब। इसमें भी कुछ का पेट पालन होने ही वाला हुआ।

अब बाबा रामदेव को ही देख लो, रोजी-रोटी की चिन्ता नहीं है लेकिन भ्रामक विज्ञापन करते हुए जो-तो कर रहे हैं। आधुनिक चिकित्सा को अपमानित करने और भ्रामक विज्ञापन मामले में बाबा और पंतजलि के निदेशक आचार्य बालकृष्ण को सुप्रीम कोर्ट ने लताड़ा तो बाबा बोले- 'उत्साह में गलती हुई।' कोर्ट तो कोर्ट ठैरी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा- 'आप इतने नादान नहीं।'

समझ तो आप भी रहे हैं कि बाबा नादान नहीं हैं। उनके अनुलोम-विलोम में बहुत ताकत है। सबका अपना-अपना हिसाब ठैरा। चुनाव प्रचार में आए अमित शाह को ही देख लो। वह कह कर गये हैं- 'अनिल बलूनी को जिता दो, गढ़वाल की सारी समस्याओं का हल हो जाएगा। इसी प्रकार सचिन पायलट हल्द्वानी आकर कह गये- 'प्रकाश जोशी वोट देकर कांग्रेस का हाथ मजबूत करो, सारे कष्ट दूर होंगे।' दाज्यू, प्रचार में आने वाले गारन्टी लेने वाले ठैरे। चुनाव परिणाम के बाद जो होना है होता रहेगा।

देहरादून में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियन्ता को सरकारी आवासीय कालोनी का निर्माण जारी रखने के लिए ठेकेदार से एक लाख की रिश्वत लेते हुए सीबीआई ने दबोचा। दाज्यू, पकड़-धकड़ तो लगी ठैरी। कौन सुधरने वाला है? मानुष जनम ऐसा ही ठैरा। सत्र 2022-23में पॉलीटेक्निक में हुए मूल्यांकन में मैकेनिकल प्रवक्ता पर लाभ देने का आरोप लग रहा है। उसने कापियां जांचते हुए भाई को अधिक नम्बर दे दिये बल। काशीपुर में पुलिस ने प्रधानाचार्य की तहरीर पर दोनों भाईयों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। रोजी-रोटी के पापड़ बेलने ठैरे....। पिथौरागढ़ जिला पंचायत में कार्यरत अभियन्ता अनिल जोशी ने थाना पुलिस में जिला पंचायत अध्यक्ष के पति के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराते हुए सुरक्षा की मांग की है। दाज्यू, आरोप है कि जिला पंचायत अध्यक्ष के पति ने फोन पर एक निर्माण कार्य की पत्रावली में जबरदस्ती हस्ताक्षर करने को कहा। चुनाव में सेक्टर मजिस्ट्रेट की ड्यूटी कर रहे अभियन्ता को जान से मारने की धमकी दी। दाज्यू, बहुत उबल रहा है जमाना। किसको कैसे समझें और किस प्रकार समझाया जाए?

-तुम्हारा भुली झकरुवा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चे च्यवा

कताई-बुनाई केवल हुनर ही नहीं बल्कि एक शारीरिक एवं मानसिक कसरत भी है

भूपाल सिंह लस्पाल

'चे च्यवा चैनल' के माध्यम से आयोजक श्री चन्द्र सिंह दास्पा ने इस बार हमारे जोहार मुनस्यारी के शौका समुदाय का पुश्तैनी ऊनी कारोबार का एक महत्वपूर्ण मुख्य भाग 'ऊन-चान टोपी कताई-बुनाई' के आयोजन का शुभारम्भ कर ऐतिहासिक रूप से एक नया अध्याय प्रस्तुत कर विलुप्त हो रहे ऊन-चान की ओर समस्त पर्वतीय अंचल के जन समुदाय का ध्यान आकृष्ट कर धन्य कर दिया है। आज बहुत ही हर्ष का विषय भी है कि इस बार के कताई बुनाई प्रतियोगिता में हमारे सम्पूर्ण जोहार मुनस्यार घाटी के अलावा नीती माणा घाटी से भी काफी मातृशक्तियों तथा युवा पीढ़ी ने उत्साहित होकर भाग लिया है। आज हमारे पर्वतीय जनमानस तक ही नहीं बल्कि देश के कोने-कोने में कताई बुनाई के इस 'ऊनी टोपी' प्रतियोगिता की धूम मची हुई है। आयोजक श्री दास्पा की अचूक दूरदृष्टि से आज हमारे जोहारी समाज के घर-परिवार से लुप्त हो रहे ऊनी कारोबार को एक बार पुनः जीवन्त करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। इस प्रतियोगिता के द्वारा दोनों घाटियों के सभी मातृशक्तियों तथा युवाजनों के मन-मस्तिष्क को भावनात्मक रूप से जोड़ पाने का एक मजबूत सेतु का निर्माण भी हुआ है।

प्राचीनकाल से ही हमारे पूर्वजों तथा बुजुर्गों द्वारा ज्वार मुनस्यार घाटी के गाँव घरों में समस्त शौका परिवार के परिश्रमी, मेहनतकश महिला एवं पुरुषों के संघर्षपूर्ण भ्रमणकारी जीवन शैली के साथ भेड़-बकरी पालन तथा उससे प्राप्त ऊन से ऊन-चान के कारोबार के बदौलत ही भाबर से लेकर हुनदेश यानि भारत-तिब्बत तक व्यापार व्यवसाय चलता रहा। उन दिनों इसी ऊनी कारोबार के बदौलत से कई पीढ़ियों के जीवन निर्वाह की व्यवस्था होता रहा। इन्हीं ऊनी कारोबार के द्वारा जोहार मुनस्यार घाटी के हर घर-परिवार को अपने तथा अपनों के पारिवारिक जीवन को सुदृढ़ एवं सुखपूर्वक निर्वाह करने के लिए वर्ष भर के लिए ऊन-चान कताई बुनाई का एक व्यवस्थित रोजगार प्रदान हो पाया। यही कारण है कि उनके संघर्षपूर्ण रात-दिन के सुख चैन के बिना कटे सफर को निरन्तर तय करते हुए तैयार किए गए दन, थुलमा, पिछौड़ा, पसमीना, कंबल, कोट-पैंट का पट्टू, घाघरा कामला, स्वेटर बनियान, मफलर टोपी इत्यादि के साथ तरह-तरह के बने ऊनी वस्त्रों को हमारे सांस्कृतिक धरोहर के प्रसिद्ध धार्मिक महत्व के स्थलों जैसे- जौलजीबी, थल, बागेश्वर उत्तरायणी के मेलों में स्टाल लगाकर ऊनी वस्तुओं का क्रय-विक्रय व आदान प्रदान किया जाता रहा। लेकिन आज उन महत्वपूर्ण जीविकोपार्जन के स्रोत से अब अल्प मात्र में कुछ नाममात्र के ऊनी कारोबार ही रह गये है। इसका खामियाजा सन् 1962 के चीन युद्ध के उपरान्त भारत तिब्बत व्यापार पर प्रतिबंध लग जाने के कारण हमारे शौका समाज एवं ऊनी कारोबार पर जो ग्रहण लगा वह आज के परिप्रेक्ष्य में अभिशाप था या वरदान !!! यह केवल एक महत्वपूर्ण शोध का विषय रह गया है।

आज विडम्बना यह है कि सम्पूर्ण विश्व पटल पर बाजार और व्यापार का दायरा केवल रेडीमेड वस्तुओं के साथ रेडीमेड वस्त्र उद्योग ने ही अपना आधिपत्य जमा लिया है। जिस कारण हमारे हस्त निर्मित ऊनी कारोबार पर हावी होकर बाजार के साथ जनमानस को भी एक आसान एवं सुलभ मंच मिल गया है। इसी के परिणामस्वरूप हमारे ऊनी कारोबार में दिन प्रतिदिन गिरावट एवं सिथिलता बदस्तूर आती गई। जो 1990 के उत्तरार्द्ध के दो दशक तक लगभग मृतप्राय सा हो गया था। लेकिन यह देख-सुनकर अत्यन्त खुशी का अहसास होता है कि वक्त के ऐसे कठिन दौर को पार करते हुए आज भी हमारे बहुत से परिवारों ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन निर्वाह के साथ पुश्तैनी ऊन-चान के कारोबार को बचाए रखा है। जिसके बदौलत हमारा हिमनगरी ज्वार-मुनस्यार का ऊनी ऊन-चान कताई बुनाई का यह पुश्तैनी कारोबार सुरक्षित बच पाया है परन्तु आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो हमारे जोहारी समाज में ऊन-चान कताई बुनाई कारोबार के प्रति सिथिलता एवं बेरूखी का मुख्य कारण सर्वविदित ही है कि उन दिनों गाँव-घरों में रोजगार और स्वरोजगार के साधनों का नितान्त अभाव रहा। जिस कारण गाँव-घर परिवारों से अधिकांश नई पीढ़ी के शिक्षित युवा जनशक्तियों का शहरों की ओर पलायन होता रहा और वहीं के चकाचौंध में विलीन होकर रह गये जिसका क्रम आज तक बदस्तूर जारी है जो हमारे भावी पीढ़ी के समाज के लिए एक सोचनीय विषय बनकर रह जायेगा। इसलिए वक्त रहते अपने मूल स्थान के साथ अपने पूर्वजों और बुजुर्गों के पारम्परिक सांस्कृतिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विरासतों एवं धरोहरों की ओर लौटना होगा।

इन्हीं सब कारण और वर्तमान को समझते हुए ऊन-चान कताई बुनाई की उपयोगिता को पुनः जीवन्त करने के उद्देश्य हेतु 'चे च्यवा चैनल' के आयोजक महोदय श्री चन्द्र सिंह दास्पा ने 'टोपी बुनाई' के एक बहुत ही सार्थक आयोजन को सम्पादित करते हुए भावनात्मक रूप से पर्वतीय अंचल के सभी मातृ शक्तियों को परस्पर जोड़कर एक पसंदीदा कार्यक्रम बना दिया है। मनोवैज्ञानिकों के स्वास्थ्य विश्लेषण के अनुसार ऊन-चान या कतार्अ-बुनाई का कार्य केवल ऊनी वस्त्रों का निर्माण करना ही नहीं बल्कि ऊन-चान कताई बुनाई को करते रहने से महिलाओं व पुरुषों के शारीरिक एवं मानसिक कसरत भी होता है। जिससे चिन्ता, तनाव या अवसाद जैसे रोग भी दूर होते हैं।

कहानी

विदाई

दीवान सिंह कठायत

हर रोज की तरह गौरव अपने जिम्मेदारी भरे दैनिक विद्यालयी क्रियाकलाप, जिन्हें वह जनरल मॉनीटर के रूप में विगत तीन वर्षों से अनवरत समर्पण व सयानापन का भाव हृदयंगम कर, करता आ रहा था अब बुझे-बुझे मन से सम्पादित करने लगा। रुँधा हुआ गला, उदासी लिए नेत्र व भारी सी चाल-ढाल आज उसके हाल-ए- दिल को, यों ही बयाँ कर दे रहे थे।

बचपन में ही पिता के साये से महरूम गरीब परिवार का यह बालक, पहली बार बूढ़ी दादी की पीठ में चढ़ आँगनवाड़ी की कक्षा में नामांकित होने, विद्यालय परिसर में पहुँचा था। धीरे-धीरे स्वतः ही इसका आकर्षण विद्यालय के प्रति बढ़ता गया। निर्धन परिवार की विवशता तथा पिता की छत्रछाया के अभाव ने उसे कम उम्र में ही काफ़ी समझदार व कर्मशील प्रकृति का बना दिया। तीसरी कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते उसके समर्पण व स्वअनुशासन का ऐसा असर हुआ कि अनेक वरिष्ठ साथियों के बावजूद स्कूली बच्चों द्वारा उसे विद्यालय का जनरल मॉनीटर चुन लिया गया। उसके मृदुल, आज्ञाकारी एवं अनुशासनप्रिय व्यवहार का पूरा स्टाफ भी कायल हो गया। नित्य प्रार्थना सभा से लेकर विद्यालय बन्द होने तक समस्त शिक्षणेत्तर गतिविधियों का संचालन व सम्पादन वह पूरी तन्मयता से करता तथा अन्य बच्चों से करवाता। अक्सर वह बहुत जरूरी होने पर ही अवकाश पर रहता था।

विद्यालयी सत्र के अन्तिम दिवस पर आज, अन्य साथियों के साथ ही उसे भी कक्षा पाँच उत्तीर्ण की टीसी व मार्कशीट मिलनी थी ताकि वह भी आगे की पढ़ाई के लिए अन्यत्र जूनियर पाठशाला में जा सके। सहपाठी बच्चे जहाँ पास होने की खुशी व दूसरे विद्यालय में जाने की व्यग्रता से आज बल्लियों उछलते हुए दिखाई दे रहे थे वहीं गौरव गमगीन व गम्भीर सा हुआ जा रहा था। जीएम पद का त्याग व इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के वरदहस्त व सहयोग का विछोह उसे अन्दर से खाए जा रहा था। इस विद्यालय की बदौलत ही वह जी तोड़ मेहनत करते हुए,अनेक रैलियों व कार्यक्रमों में शिक्षकों के साथ जिले एवं राज्य स्तर तक प्रतिभाग कर चुका था और अनेक शहरों व नगरों के दर्शन कर पाया था, बहुत कुछ जान सका था।

शिक्षकों ने सदैव उसके प्रति सकारात्मक व सहयोगी रुख़ बनाए रखा, जिसने उसके मनोबल को बढ़ाया और उसके भीतर आत्मसम्मान की भावना को प्रबल किया। विदाई के पलों में आज मध्याह्न भोजन में तैयार विशेष भोज को ग्रहण करने के उपरान्त, प्रधानाध्यापक महोदय द्वारा सभी उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं शुभ कामनाएं प्रदान करते हुए, अंक पत्र व प्रमाण पत्र दिये जाने लगे। ज्यों ही अन्त में गौरव का नम्बर आया वह जोर- जोर से रूदन करने लगा। काँपते हाथों से पत्रों को पकड़ वह अब भारी डग भर सिसकते हुए घर की ओर जाने लगा। डबडबाइ आँखों से सभी शिक्षक किंकर्तव्यविमूढ़ से बन, बस उसे देखे जा रहे थे- देखे जा रहे थे -देखे जा रहे थे।

ज्योतिष की बातें - 175

1 मई 2024 को गुरु मित्रराशि मेष से निकलकर शत्रुराशि वृषभ में प्रवेश करेगा और शनि की तृतीय दृष्टि से भी मुक्त हो जाएगा। कुल मिलाकर गुरु निर्बल ही रहेगा अतः गुरु के शुभफलों की अधिक आशा नहीं की जा सकती। गुरु धन-समृद्धि, शालीनता, विवाह, पुत्रलाभ, उच्च शिक्षा, धर्म परायणता, अध्यात्म, संस्कृति आदि का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार गुरु दूसरे, पांचवें, सातवें, नवमें और ग्यारहवें स्थान पर शुभफल प्रदान करता है और चौथे, आठवें, बारहवें स्थान पर अशुभ फल प्रदान करता है। शेष पहले, तीसरे, छठवें और दसवें स्थान पर उपाय करने पर गुरु शुभफल प्रदान करता है। अतः अगले एक वर्ष गुरु अपने कारक विषयों में मेष, मकर, वृश्चिक, कन्या व कर्क राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा। कुम्भ, तुला व मीन राशि के जातकों को अशुभ फल प्रदान करेगा। शेष वृषभ, मीन, धनु व सिंह राशि के जातकों को उपाय करने पर गुरु अल्प मात्र में शुभफल प्रदान करेगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 66

गुरु बनाने के खतरे

हिन्दू समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में किसी न किसी को गुरु बनाना चाहता है। किसी को गुरु बनाने अथवा किसी सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाने के बाद उस व्यक्ति के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आता है। उसमें निम्नलिखित लक्षणों में से अधिकांश लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

1 किसी के शिष्य बन जाने अर्थात् गुरु बना लेने के बाद व्यक्ति अपने गुरु को ही सर्वश्रेष्ठ समझता है और अन्य सभी सन्तों महात्माओं को हेय दृष्टि से देखा है ।

2. अपने गुरु के प्रवचनों को ही सुनता है अन्य किसी भी साधु सन्तों के प्रवचनों को फिर नहीं सुनना चाहता।

3. घर पर जो भगवान की बड़ी सी फोटो लगी रहती है उसकी जगह पर अपने गुरु की फोटो लगा देता है और भगवान को कहीं और कोने में बैठा देता है।

4. मूर्तिपूजा का प्रायः विरोध करने लगता है लेकिन अपने गुरु की मूर्ति की पूजा पूरी लगन से करता है।

5. हिन्दू धर्म के मूलप्राण वर्णाश्रम धर्म, श्राद्ध, तर्पण आदि का विरोध करने लगता है।

6. अपने धर्मग्रन्थों वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि को पढ़ने की रुचि समाप्त हो जाती है। व्यक्ति फिर अपने गुरु की लिखी हुई पुस्तकों को ही केवल पढ़ता है।

7. घर में मनाए जाने वाले व्रत, पर्व, उत्सव होली दिवाली आदि मनाने में उसकी रुचि समाप्त हो जाती है।

8. तीर्थयात्रा के लिए चारों धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ आदि के दर्शन करने की लालसा समाप्त हो जाती है और अपने गुरु के मुख्य आश्रम को ही तीर्थ समझता है।

9. अपने घर में हजारों सालों से चली आ रही रीति-रिवाजों, परम्पराओं को वह व्यक्ति किसी को गुरु बनाने के बाद फिर नहीं मानता है। उन रीति रिवाजों को पाखण्ड मानकर अपने ही घर वालों से विरोध करता है।

10. वह भगवान की पूजा को सर्वथा त्यागकर अपने गुरु की ही नियमित पूजा करता है और फिर वह नाममात्र का ही हिन्दू अथवा सनातनी रहता है।

अतः किसी को गुरु बनाने के पहले यह अच्छी तरह देख लें कि उस गुरु के शिष्यों में अथवा उस सम्प्रदाय के व्यक्तियों में उपरोक्त लक्षण तो नहीं पाए जाते हैं ।

-सरल

२ मई को पूर्व सैनिकों की भर्ती

रानीखेत। कुमाऊँ नागा रेजीमेंट के पूर्व सैनिकों को फिर से सेवा का अवसर मिलेगा। केआरसी रानीखेत में दो मई को पूर्व सैनिकों के लिये डीएससी की भर्ती का आयोजन किया जा रहा है। सिपाही जनरल ड्यूटी और सिपाही क्लर्क के पदों के लिये प्रस्तावित भर्ती में मेडिकल केटेगरी शेप-1 में आने वाले पूर्व सैनिक हिस्सा ले सकेंगे। भर्ती अधिकारी कार्यालय के अनुसार 31 मई 2022 से 30 अप्रैल 2024 तक सेवानिवृत्त हुए 46 साल से कम आये के अभ्यर्थी हिस्सा ले सकते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उषा-अनिरुद्ध मंडप भी वेडिंग डेस्टिनेशन

रुद्रप्रयाग। श्री त्रियुगीनारायण मन्दिर को वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में मिली प्रसिद्धि के बाद बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति के अध्यक्ष अजेन्द्र अजय की उषा-अनिरुद्ध विवाह स्थली ओंकारेश्वर मन्दिर उखीमठ को वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने की तैयारी है। इस बीच दिल्ली के एक जोड़े की शादी भी यहाँ सम्पन्न हो चुकी है।

उद्यमिता विकास कोर्स लागू होगा

देहरादून। उच्च शिक्षा में इसी सत्र से उद्यमिता विकास के कोर्स को शामिल करने की तैयारी है। बताया जा रह है कि इसके लिये भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान की ओर से कोर्स तैयार किया जा रहा है, जिसे सभी महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जायेगा। पाठ्यक्रम मो ऑनलाइन भी चलाया जायेगा ताकि स्वरोजगार सृजित होने के साथ ही स्टार्टअप को बढ़ावा मिले।

गुरुद्वारा ज्ञानगोदड़ी के लिये जगह

नैनीताल। हाईकोर्ट ने हरिद्वार में हरकी पैड़ी के समीप स्थित ज्ञान गोदड़ी गुरुद्वारे के पुनर्निर्माण को लेकर जनहित याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को निर्देश दिया है कि ज्ञानगोदड़ी स्थापित करने के लिये जगह चिह्नित करें। बता दें कि शिरोमणि प्रबन्ध कमेटी अमृतसर और दो अन्य ने हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर कर कहा था कि हरिद्वार हरकी पैड़ी के समीप ज्ञान गोदड़ी गुरुद्वारे का पुनर्निर्माण किया जाए।

हाईकोर्ट की भूमि के लिये वनभूमि का सर्वे

हल्द्वानी। हाईकोर्ट की भूमि को लेकर तहसील प्रशासन, वन और लोग निर्माण विभाग का सर्वे शुरु हो चुका है। इससे पहले जू की 2008 हेक्टेयर भूमि का सर्वे हो चुका था, अब दूसरी बार यह सर्वे होगा। असल में हाईकोर्ट परिसर के लिये जिला प्रशासन को भूमि नहीं मिल पाई है, इसी क्रम में यह सब चल रहा है।

चुनाव के बाद पूर्णागिरी में फिर से श्रद्धालुओं की भीड़

टनकपुर। उत्तर भारत के बड़े मेलों में से एक पूर्णागिरी में श्रद्धालुओं की भीड़ बनी हुई है। प्रथम चरण के मतदान के दौरान सीमा सील होने के कारण बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या कम हुई थी। क्योंकि पूर्णागिरी आने वाले श्रद्धालु सीमा पार जाकर सिद्धबाबा मन्दिर (नेपाल) के भी दर्शन करते हैं।

मतदान के बाद बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के जत्थे फिर से पूर्णागिरी के दर्शन के लिये आने लगे हैं। स्पेशल ट्रेन संचालित होने व निजी वाहनों से बहुत दूर-दूर से लोगों की अथाह भीड़ मेले में दिखाई दे रही है।

९ जून को नन्दामाई मन्दिर मर्तोली में होगा भव्य अनुष्ठान

जोहार। आगामी 9 जून को मर्तोली में नव निर्मित नन्दामाई मन्दिर में भव्य अनुष्ठान होगा। आयोजन के लिये तैयारियां होने लगी हैं।

मर्तोली स्थिति नन्दा मन्दिर के नव निर्माण के बाद मर्तोलिया बन्धु लम्बे समय से इस तैयारी में थे और आयोजन को लेकर बराबर मंथन होता रहा है। असल में आयोजन के साथ ही इसे पाँचवे धाम के रूप में विकसित करने के लिये काफी पहले से ही तैयारी हो रही थी। मर्तोली सहित विभिन्न स्थानों पर रह रहे मर्तोलिया बिरादरों व ध्वैनियों के सहयोग से सुदूर क्षेत्र में प्राचीन मन्दिर को सुन्दर आकार दिया गया है और इसके विस्तार के लिये श्रद्धालुओं से अपील की गई है। अब जबकि नन्दामाई मन्दिर का नवनिर्माण हो चुका है। इसके अनुष्ठान की तैयारी है। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है जिसमें मन्दिर व इससे जुड़ी तमाम जानकारियों को दिया जाएगा। अनुमान है इस विराट आयोजन में नन्दामाई के भक्त दूर-दूर से मर्तोली पहुंचेंगे।

विधायकों की परीक्षा भी है यह चुनाव

लोकसभा चुनाव में किस विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी को कितने मत पड़े, इसे देखते हुए विधायकों की भी इस बार कड़ी परीक्षा है। पूरे चुनाव में शोर कम और बात-व्यवहार का ताना-बाना बुना गया है। पार्टियां भी इस बात पर ध्यान दे रही हैं कि किस विधानसभा में कौन विधायक कितना सक्रिय था और वहाँ से कितने मत पार्टी के पाले में पड़े हैं। ऐसे में वर्तमान विधायकों पर ज्यादा दबाव रहा है कि वह अपनी पार्टी के लोकसभा प्रत्याशी के पक्ष में अधिकाधिक मतदान कराएं, यह बात दूसरी है कि मतदाता क्या करने वाले हैं। गढ़वाल सीट पर सुबोध उनियाल सहित 13 विधायकों पर पूरा दारोमदार है। टिहरी सीट पर गणेश जोशी सहित 11 विधायकों की कड़ी परीक्षा है। हरिद्वार सीट पर प्रेमचंद अग्रवाल सहित 6 भाजपा विधायकों व पूर्व मंत्रियों सहित विपक्ष के विधायक दबाव में हैं। पूरे देश की नज़र इस सीट पर है। नैनीताल लोकसभा सीट पर बंशीधर भगत सहित 9 विधायकों की परीक्षा होनी है। अल्मोड़ा लोकसभा सीट पर सीधे सीएम पुष्कर सिंह धामी सहित 9 विधायकों पर दारोमदार है। परिणाम आने बाद सभी विधायकों के दावे और दमखम दिखाई देगा।

गढ़वाल की सीटों पर हलचल ज्यादा

देहरादून। लोकसभा चुनाव में उत्तराखण्ड एकतरफा भाजपाई रंग में रंगने जा रहा था लेकिन गढ़वाल की तीन लोक सभा सीटों पर हलचल से सबका ध्यान इस ओर है। भाजपा खेमे में भी हड़कम्प मचा जिस कारण लगातार स्टार प्रचारक गढ़वाल में आते रहे। हरिद्वार, टिहरी, पौड़ी लोकसभा सीट पर भाजपा ने पूरी ताकत लगाई और हालातों को देखते हुए प्रत्याशी चेहरे भी बदले थे लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत का हरिद्वार सीट पर सुपुत्र वीरेन्द्र के लिये सारथी बनना, पौड़ी सीट में कांग्रेस के प्रत्याशी गोदियाल का धमाकेदार आगाज, टिहरी सीट पर बॉबी पंवार का आक्रामक पहाड़ीपन भाजपा को सोचने के लिये मजबूर कर गया है। संगठन-सत्ता, प्रचार प्रसार में भाजपा बहुत आगे होने के बावजूद स्थानीय मुद्दों की मार झेलती दिखाई दी है। अंकिता हत्याकाण्ड, भूकानून, बेरोजगारी, अग्निवीर सहित तमाम मुद्दों पर विपक्ष भाजपा को घेरता रहा।

परिक्रमा

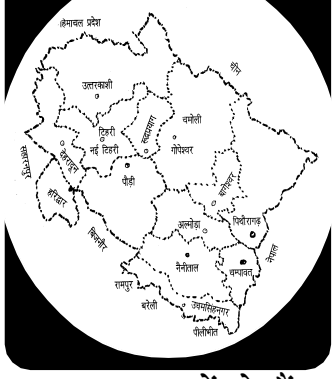

हरिद्वार सीट पर भीतरघात खूब हुआ

हरिद्वार लोकसभा सीट भाजपा के लिये एकतरफा नहीं मानी जा रही है क्योंकि यहाँ भीतरघात खूब हुआ है। पार्टी टिकट के लिये भाजपा अन्त तक उलझती रही है। पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक का टिकट काटकर पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत को इस सीट से प्रत्याशी बनाया गया। टिकट की चाह में दूसरे बड़े नेता भी आस लगाये हुए थे। भाजपा के कुछ अहम नेता 2022 का विधानसभा चुनाव हार चुके हैं। इन नेताओं के साथ त्रिवेन्द्र के साथ रिश्ते उतने सरल नहीं हैं कि सब खुलकर मेहनत करेंगे। ऐसे में भीतरघात से इन्तकार नहीं किया जा सकता है। लगभग 20 लाख मतदाताओं वाली इस सीट पर विपक्ष का गणित बनता दिखाई दे रहा है। बसपा ने यूपी के मुस्लिम नेता को यहाँ से अपना उम्मीदवार बनाया लेकिन जो रुझान दिखाई दिया उससे पता चलता है कि विपक्ष एकता के लिये नेता कांग्रेस की ओर हो गये। इस लोकसभा सीट में 14 विधान सभाओं में से 5 पर कांग्रेस, 6 पर भाजपा, दो पर बसपा, एक निर्दलीय विधायक हैं। अब इसके परिणाम पर ही हरदा की भविष्य की राजनीति टिकी है।

सबसे मजबूत गोदियाल, बहुत घेरा

उत्तराखण्ड की यदि पाँचों सीटों की बात करें तो पौड़ी से कांग्रेस प्रत्याशी गणेश गोदियाल सबसे मजबूत दिखाई दिये हैं। उनके आक्रामक रूख को देखते हुए पीएम नरेन्द्र मोदी, अमित शाह, जे.पी.नड्डा, योगी आदित्यनाथ, राजनाथ सिंह, स्मृति ईरानी, जनरल वी. के. सिंह ने लोकसभा पौड़ी में जाकर सभाएं की। मुख्यमंत्री धामी सहित प्रदेश के अन्य नेता लगातार हेलीकॉप्टर से आते रहे। भाजपा का ब्राण्ड चेहरा अनिल बलूनी को प्रत्याशी बनाने के बाद भी भाजपा को इतने ज्यादा इन्तजाम गोदियाल के खिलाफ करने पड़े। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गणेश गोदियाल ने कितनी ताकत से चुनाव लड़ा है। शुरू से ही स्थानीय मुद्दों को लेकर गोदियाल ने जिस प्रकार से गढ़वाली भाषा में अपनी बात रखनी शुरू की थी उसकी धार अन्त तक दिखाई दी। बांकी तो परिणाम आने पर पता चलेगा।

नैनीताल सीट पर खूब हुई मुंहजोरी

नैनीताल-उधमसिंह नगर लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी अजय भट्ट दमदार प्रत्याशी हैं लेकिन उनकी ओर से की गई दौड़भाग बता रही है कि इस बार सबकुछ एकतरफा नहीं था। मजबूत संगठन और अनुभव होने के बाद भी श्री भट्ट को कांग्रेस की ओर से बराबर घेरा गया। ऐसे समय में जब कांग्रेस के दिग्गज टूटकर भाजपा में मिलते रहे कांग्रेस ने मजबूती से चुनाव लड़ा है। कांग्रेस प्रत्याशी प्रकाश जोशी ने अजय भट्ट से 5 साल में किये गये कार्यों का हिसाब मांगते हुए लगातार ताना दिया कि वह मोदी का नाम लेकर वोट मांग रहे हैं। सांसद ने ऐसा कुछ नहीं किया है कि जनता उन्हें अपना वोट दे। लागातार प्रेस वार्ता और बयानों में प्रकाश जोशी अपनी बात रखते रहे। कांग्रेस प्रत्याशी के हमले के जबाव में अजय भट्ट ने भी उन्हें नोटिस दिलावाया और कहा राजनीति में आने के लिये पूरी जानकारी होनी चाहिये। उन्होंने क्या किया है इसका पूरा हिसाब है। इस प्रकार नैनीताल सीट पर खूब मुंह जोरी होती रही अब परिणाम आना है।

चारधाम यात्रा में रिकार्ड पंजीकरण

चमोली। चारधाम यात्रा के लिये इस बार रिकार्ड संख्या में पंजीकरण होने लगे हैं। तीन दिन के अन्दर ही सात लाख से अधिक लोगों ने पंजीकरण करवा लिया। ऐसे में उम्मीद है कि इस सीजन पुराने रिकार्ड टूट सकते हैं। यात्रा के लिये पर्यटन विभाग ने पंजीकरण शुरू किया है। जिसमें वेबसाइट के माध्यम से देश-विदेश से यह बुकिंग हो रही है।

स्वास्थ्य विभाग ने भेजी एसओपी

देहरादून। चारधाम यात्रा में आने वाले यात्रियों की यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाने के लिये स्वास्थ्य विभाग ने हिन्दी, अंग्रेजी के साथ गुजराती, मराठी, तेलगू समेत 9 स्थानीय भाषाओं में मानक प्रचलन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार कर बाहरी राज्यों को भेजी है। जिसमें यात्रा शुरू करने से पहले यात्रियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी दिशा-निर्देश दिए गए। सलाह दी है कम से कम सात दिन के लिये चारधाम यात्रा की योजना बनाएं।

११ दवाओं के सैंपल फेल पाए गए

उत्तराखण्ड में बनी 11 दवाओं के सैम्पल जाँच में फेल पाए गए हैं। जिस पर राज्य के खाद्य संरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने इन दवाओं को बनोन वाली 9 कम्पनियों के दवा निर्माण लाइसेंस निलम्बित कर दिए हैं। साथ ही यह दवाएं बाजार से भी वापस मंगा ली गई हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा करवाई जा रही जाँच में देशभर की निर्माण इकाईयों में नियमित सैम्पलिंग की जा रही है। पिछले माह 931 सैम्पलों की जाँच की गई इसमें 864 सैम्पल सही पाए गए जबकि 66 फेल हुए। इनमें उत्तराखण्ड में बनी 11 दवाओं के सैम्पल मानकों पर खरे नहीं उतरे। जिन निर्माण इकाईयों के सैम्पल फेल हुए उनमें दो देहरादून और अन्य हरिद्वार जिले की हैं। डाइक्लोमाइन हाइड्रोक्लोराइड, जेंटामाइसिन व मिथाइल कोबालमिन इंजेक्शन, को-ट्रिमोक्साजोल सिरप, ओमेप्रजोल डोम्पेरिडोन टैबलेट, लैक्टोजर्म कैप्सूल, ओफ्लाक्सासिन ओनर्डिजोल टैबलेट के नमूने फेल हुए

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मुनस्यारी-मिलम पैदल पुल दुरुस्त किया जाए, आफत मची है

पि.हि.प्रतिनिधि

सीमान्त क्षेत्र में मुनस्यारी-मिलम पैदल पुल टूटने से जिस प्रकार की आफत मची है, उसे तुरन्त दुरुस्त किया जाना जरूरी है। चीन सीमा पर मुनस्यारी-मिलम मार्ग को जोड़ने वाला एकमात्र पुल विगत दिवस टूट गया था। इससे सीमा पर बसे गाँवों औरसेना की चौकियों तक आवाजाही में दिक्कत हुई है।

मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने बताया कि मुनस्यारी रिलगाड़ी झूला पुल 83 बार्डर रोड आर्गेनाइजेशन दरकोट द्वारा जो भारत तिब्बत चीन सीमा मोटर रोड का निर्माण किया जा रहा है झूला पुल निर्माण के दौरान टूट गया है जिससे सीमान्त के गाँव सम्पर्क स्थापित करने

के लिए साथ माइग्रेशन जाने वाले परिवार पुल टूट जाने के कारण अपने जानवरों के साथ भेड़ पालक व जानवर नहीं जा सकते हैं इसलिए तुरन्त वैकल्पिक व्यवस्था नदी के ऊपर पुल बनाने की कार्यवाही बिना विलम्ब किया जाए। यदि समय पर पुल का निर्माण ना किया गया तो माइग्रेशन परिवार के लोग साथी अन्य लोग भी सीमान्त क्षेत्र में नहीं जा सकेंगे।

बताते चलें कि सड़क कटिंग के दौरान एक बोल्डर सीधे पैदल पुल पर गिरा, जिससे पुल टूट गया था। पुल टूटने से इस मार्ग पर आवाजाही बन्द हो गई। माइग्रेशन पर जाने वाले लोगों और सेना को परेशानी का सामना करना पड़ा। इस समय में माइग्रेशन गाँवों के लिये लोग घाटी के गाँवों से जाने लगे हैं। ऐसे में रास्ता बन्द होने से लोगों को दिक्कत हुई है। इन लोगों का यह भी कहना है कि मुनस्यारी-मिलम मोटर निर्माण के मलबे के कारण आए दिन रास्ता बन्द हो रहा है। मार्ग पर अधिकांश हिस्सा सड़क के मलबे से पटा हुआ है। लोनिवि के ईई ने कहा कि पुल टूटा है तो शीघ्र ठीक किया जाएगा ताकि किसी को आवागमन में असुविधा न हो।

डरावना-वीराना गेस्ट हाउस दन्या

सरकारी सम्पत्ति को उजाड़ बनाने का काम जारी है

गणेश सिंह रावत

दन्या। अल्मोड़ा जिले का प्रमुख इलाका दन्या लगातार उपेक्षा का शिकार हो रहा है। हाल यह हो चुके हैं कि कभी यात्री बसों के रुकने का प्रमुख पड़ाव दन्या में वाहन चालक भी इधर-उधर बसों को रोकने लगे हैं। घिचपिच हो रहे क्षेत्र में संघर्ष समिति के आन्दोलन के बाद शासन प्रशासन का ध्यान इस ओर था लेकिन लम्बे समय से इसकी कोई सुध नहीं ले रहा है। सरकारी सम्पत्तियों का तो मानो कोई रखवाला ही न रह गया हो।

पी.डब्लु.डी. गेस्ट हाउस दन्या विभागीय अनदेखी के चलते डरावना वीराना बन बन चुका है। यह गेस्ट हाउस बाजार के बीचों बीच बना हुआ है। कुछ वर्ष पहले यहाँ पी.डब्लु.डी. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी स्व. पूरन चन्द्र भट्ट कार्यरत थे। उनके रहते यह गेस्ट हाउस चमकता

नजर आता था, यहाँ फूलों की सुगन्ध सबको मोह लेती थी परन्तु वर्तमान में यहाँ कूड़े का ढेर बन चुका है और दुर्गन्ध आने लगी है। बताया जा रहा है कि पूरन चन्द्र भट्ट की मृत्यु के उपरान्त विभाग द्वारा जिन्हें नियुक्त किया गया, कुछ ही दिनों में वह भी चले गये। ऐसे में किसी तरह की देखरेख के बिना यह गेस्ट हाउस वीरान और गन्दगी का अड्डा बनता जा रहा है। क्षेत्रवासियों ने विभाग से मांग की है कि वह इस सरकारी सम्पत्ति की सुध ले ताकि इसका सदुपयोग के साथ ही विभाग को ही लाभ मिल सके।

बताते चलें कि गन्दगी का ऐसा ही हाल टीआरसी के मार्गीय सुविधा केन्द्र का हो चुका है। दन्या में यह सब क्या होने लगा है, जो बहुत ही चिन्ता की बात है। दन्या को संवारने के लिये जागरुक जनों को सक्रियता दिखानी होगी।

आडिट एक्ट के प्रावधान में उदासीनता बरते जाने का आरोप

आरटीआई एक्टिविस्ट रमेश पाण्डे ने मुख्यमंत्री को भेजते हुए जवाबदेही सुनिश्चित करने को कहा

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड राज्य में सभी सरकारी विभागों, सार्वजनिक निगमों, सरकारी कम्पनियों, प्रतिष्ठानों, सांविधिक प्राधिकरणों, पंचायतीराज संस्थाओं, नगर पालिकाओं, स्थानीय निकायों, सहकारी समितियों की लेखा परीक्षा की व्यवस्था करने और उसको विनियमित करने के लिए बनाये गये उत्तराखण्ड लेखा परीक्षा अधिनियम 2012 के अनुसार राज्य में आडिट कार्य तो हो रहा है लेकिन आडिट कार्य सम्पन्न होने के बाद प्राप्त आडिट रिपोर्ट पर कार्यवाही के लिए एक्ट में निहित प्राविधानों का पालन नहीं हो रहा है। इस स्थिति के चलते गबन, दुर्विनियोग, जालसाजी जैसी करोड़ो की धनराशि के गम्भीर आडिट रिपोर्ट वर्षों से फाइलों में धूल फांक रही हैं। आरटीआई एक्टिविस्ट रमेश चन्द्र पाण्डे ने मुख्यमंत्री को मेल से भेजे पत्र में आरटीआई से प्राप्त सूचना के आधार पर परिलक्षित उक्त स्थिति को विस्तार से उजागर करते हुए आडिट एक्ट का जवाबदेही के साथ परिपालन सुनिश्चित कराने का अनुरोध किया है।

हल्द्वानी के देवकीबिहार निवासी आरटीआई एक्टिविस्ट रमेश चन्द्र पाण्डे ने मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में आडिट एक्ट के परिपालन मे बरती जा रही लापरवाही और उदासीनता का जो गम्भीर आरोप लगाया है वह उधमसिंह नगर में चावल संचरण में हुई अनियमितता सम्बन्धी एसआइटी की जाँच रिपोर्ट, वर्ष 2015-16 एवं 2016-17 की स्पेशल आडिट रिपोर्ट तथा इसकी परिपालन आख्या की प्राप्त सूचना के आधार पर लगाया है।

मुख्यमंत्री को भेजे गये तीन पन्नो के पत्र में किये गये उल्लेख के अनुसार डीएम उधमसिंहनगर द्वारा 27 सितम्बर 2017 को शासन को भेजी गई रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रकरण में अभिलेखों की कूटरचना का व दो वर्षों में लगभग 600 करोड़ की शासकीय धनराशि के अपव्यय का आलथक अपराध व्यापक स्तर पर होना परिलक्षित हुआ है। संकलित तथ्यों एवं साक्ष्यों के आधार पर किसी प्रकार की दण्डात्मक कार्यवाही से पूर्व सम्पूर्ण प्रकरण की जाँच किसी विशेष आयोग या आर्थिक अपराध अनुसंधान शाखा या संस्था से कराया जाना उचित

होगा।

शासन द्वारा 23 अक्टूबर 2017 को उक्त प्रकरण की विशेष लेखा परीक्षा कराने के आदेश दिये जिसके परिपालन में आडिट टीम द्वारा 31 मम्र 2018 को आडिट समाप्त किया गया। शासन द्वारा 3 जून 2020 को स्पेशल आडिट रिपोर्ट निर्गत की गई जिसमें एस.आइ.टी. द्वारा आगणित 600 करोड़ के शासकीय धनराशि के अपव्यय की पुष्टि की गई। आडिट निदेशालय द्वारा इस आडिट रिपोर्ट की जो परिपालन आख्या उपलब्ध करायी गई है उसमें यह स्पष्ट नहीं है कि सम्बन्धित विभाग से किस पत्र द्वारा और कब यह परिपालन आडिट विभाग को भेजा गया और इस पर अब तक क्या कार्यवाही हुई है।

आडिट एक्ट की धारा-9 में आडिट प्रस्तरों के निस्तारण हेतु निहित प्राविधान में स्पष्ट किया गया है कि सरकारी धन के दुरुपयोग, गबन, जालसाजी जैसे महत्वपूर्ण मामलों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा ताकि दोषी व्यक्तियों को समय से दण्डित किया जा सके। एक्ट की धारा 9(5)(ख) के अनुसार लेखा परीक्षा कार्य में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से मुख्य सचिव, प्रशासकीय विभाग एवं विभागाध्यक्ष के स्तर पर आडिट कमेटी का गठन किया जायेगा। गठित कमेटी द्वारा नियमित रुप से बैठक कर आडिट रिपोर्ट का रिव्यू किया जायेगा।

पत्र में कहा गया है कि शासन द्वारा 7 अक्टूबर 2016 को उक्तानुसार कमेटी गठित की गई हैं लेकिन संज्ञान में आया है कि मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली 7 सदस्यीय 'राज्य स्तरीय सम्परीक्षा समिति' की विगत कई वर्षो से बैठक ही नहीं हुई है जिसके कारण कई गम्भीर आडिट प्रस्तरों पर कार्यवाही लम्बित है। एक्ट की धारा 8(3) के अनुरुप वार्षिक आडिट रिपोर्ट प्रतिवर्ष विधानसभा के समक्ष नहह्न रखी गई। इस सम्बन्ध में आरटीआई से मिली सूचना जब मीडिया के जरिये उजागर हुई तो गत मानसून सत्र में 2014-15 से 2021-22 तक 8 सालों की रिपोर्ट एक साथ विधानसभा के समक्ष रखी गई लेकिन संज्ञान में आया है कि इनके साथ चावल संचरण में अनियमितता सम्बन्धी उक्त स्पेशल आडिट रिपोर्ट सदन के पटल पर नहीं रखी गई।

पत्र में कहा गया है कि उक्त स्थिति के कारण जहां एक ओर भ्रष्टाचार को उजागर करने वालों के हौसले पस्त हैं वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार करने वालों के हौसले बुलन्द हैं जिससे उत्तराखण्ड की लोकप्रिय सरकार की छवि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

श्री पाण्डे ने पृथक से मुख्य सचिव को भी पत्र भेजकर उनसे गम्भीर आडिट प्रस्तरों के निस्तारण हेतु तत्काल राज्य स्तरीय सम्परीक्षा समिति की बैठक आयोजित करने का आग्रह किया है ।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

'कालयुक्त' नाम संवत्सर २०८१ विक्रमी प्रारम्भ होने की शुभकामनाओं के साथ-

दान सिंह गड़िया
राज्य आन्दोलनकारी
कपकोट

K.V.M. PUBLIC SCHOOL
Heera Nagar
Haldwani
Mb N.- 9219400940, 9219632339

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर
घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

पूर्ण कालिक
संगीत प्रशिक्षण
केन्द्र
हिमालय संगीत
शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)